कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 52

चने की फसल में फली छेदक एवं प्रबंधन

प्रतिभा पाण्डेय, निहारिका गुप्ता, एवं नेहा चंद्रवंशी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।
Email Id: agriaditya89@gmail.com

परिचय

चने को आमतौर पर बंगाल ग्राम या काबुली चना या छोले चना भी कहा जाता है। चना रबी सीजन की प्रमुख फसल मानी जाती है। इसका वानस्पतिक नाम *सेसर अरिएतिनुम* है। चना न केवल सब्जी बनाने के काम आता है हम इसे कच्चे रूप में भी उपयोग करते है मनुष्य के उपयोग के अलावा इसका फसल अवशेष पशुओ को चारे के रूप में लिया जाता है। चना एक बहुत ही उपयोगी दलहनी फसल् है जिसमे प्रोटीन(२१.९%),कार्बोहाइड्रेट (६१.५) आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

चने की खेती सिंचित एवं असिंचित दोनों दशा में की जाती है। पिछले दो दशक में सिंचाई की सुविधाओं के कारण धान और गेहूं की फसलों ने चने की कृषि योग्य क्षेत्रों को विकल्प दिया है। धान और गेहूं फसल चक्र के वजह से इन खेतों की उर्वरकता में कमी आई है, साथ ही साथ जहाँ पर धान की खेती के बाद चने की फसल की बुवाई देर से होती है, जिससे कि तना छेदक कीटों का प्रकोप अधिक होता है, इसलिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन के द्वारा फसल बचाव के उपायों को अपना कर मृदा की उत्पदकता बढ़ाने या बनाये रखने के साथ–साथ कीटों एवं रोगों के संक्रमण से फसल को बचाया जा सकता है ताकि फसल में कम से कम आर्थिक क्षति हों। अतः समेकित नाशीजीव प्रबंधन एक सर्वश्रेष्ठ विधि है, जिसमें पारंपारिक, यांत्रिक, जैविक एवं रासायनिक नाशीजीवानाशकों का प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है की नाशीजीवों का प्रकोप फसलों में कम से कम हो, और पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचे और आर्थिक दृष्टि से स्वीकार्य हों। इस प्रणाली में सभी युक्तियों को सामूहिक रूप से सही क्रमवार के हिसाब से फसलों को नाशीजीवों से बचाने के लिए होता है और ये ध्यान दिया जाता है कि रासायनिक दवाओं का कम से कम एवं अत्यंत आवश्यकता पड़ने पर ही उपयोग किया जाए।

फली छेदक

चने की फसल को सर्वाधिक क्षति पहुंचाने वाला कीट है। किसान चना फली छेदक का प्रकोप उस समय समझ पाते हैं जब सुंडी बड़ी होकर चना की फसल को 5–7 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचा चुकी होती है। चना भेदक न केवल फली को नुकसान पहुचता है बल्कि फसल को पत्ती रहित बना देता है। जब एक फसल पे उसका प्रकोप हो जाता है तो वो दूसरी फसल की ओर बढ़ जाता है। चना भेदक फसल के उत्पादन में रुकावट का काम करता है। जब तक कीट को संक्रमण के प्रारंभिक चरणों में नियंत्रित नहीं किया जाता है तब तक यह फसल को भारी मात्र में क्षति पहुचता है।

उपाय :

हम अगर एकीकृत प्रबंधन की बात करे तो ज्यादा उचित रहेगा :

1. **सस्य क्रिया द्वारा :** खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए। चने की फसल की जल्दी बुवाई करे फली छेदक का प्रकोप जल्दी बोई गयी फसल पर कम होता है।
2. **मैकेनिकल (यांत्रिक) विधि :** प्रकाश प्रपंच व फेरोमोन प्रपंच कीटो खेतो में लगा सकते है।
3. **जैविक नियंत्रण :** नुक्लेअर पोलिहद्रो वायरस (एन. पी.व्ही) का २५० एल. ई १ किलो ग्रा. से १.२ किलो ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करे।
4. **रासायनिक नियंत्रण :** कुइनोल्फोस २५ ई.सी ५०० मि.लि या मेलाथियान ५० ई .सी १००० मि.लि प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करे।